“दलित लेखिकाओं की आत्मकथा का समाजशास्त्रीय अध्ययन”

(कौसल्या बैसंत्री, सुशील टाकभौरे, सुमित्रा महरोल, रजनी तिलक एवं कावेरी के विशेष संदर्भ में)

विश्वविद्यालय हिन्दी – विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

की पी-एच. डी. उपाधि के लिए प्रस्तावित

शोध – प्रारूप

संकाय – मानविकी
विषय – हिन्दी

शोध निर्देशिका :

विनीता कुमारी
15-04-2024
अध्यक्ष; हिन्दी विभाग
एल०के०वी०डी० कॉलेज
ताजपुर (समस्तीपुर)

डॉ० विनीता कुमारी
एसोसिएट प्रोफेसर
डॉ० एल० के० वी० डी० कॉलेज ताजपुर, समस्तीपुर

शोधार्थी :

अंशु कुमारी
एम० ए० हिन्दी
ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा
नेट, जे० आर० एफ०
पैट क्रमांक – E2209044

➢ **<u>प्रस्तावना :-</u>**

हिन्दी साहित्य में आत्मकथा विधा की शुरुआत बनारसी दास जैन द्वारा लिखित 'अर्धकथानक' को माना जाता है | इसके बाद लंबे अंतराल के बाद श्यामसुन्दर दास कृत 'मेरी आत्मकहानी' हिन्दी की प्रसिद्ध आत्मकथा मानी जाती है | हिन्दी आत्मकथा के क्षेत्र में स्त्री लेखिका ने भी लगातार अपनी आत्मकथा लिखती गई और आत्मकथा विधा समृद्ध होती गई | डॉ0 हरिवंश राय बच्चन कहते हैं "आत्मकथा लेखन की वह वह विधा है जिस में लेखक ईमानदारी के साथ आत्मनिरीक्षण करता हुआ अपने देशकाल, परिवेश से सामंजस्य अथवा संघर्ष के द्वारा अपने को विकसित एवं प्रस्थापित करता है|"

आत्मकथा की छवि सत्य पर पूर्णतः आधारित होती है जिसमें वे समाज समुद्र के तूफान में घिरे मनुष्य की चीख होती है | श्रेष्ठ आत्मकथाएं हमारे भीतर की भावना एवं विचार को निखारती है | आत्मकथा दो प्रकार के होते हैं- प्रथम सक्रिय, दूसरा निष्क्रिय | सक्रिय आत्मकथा समाज के लिए प्रेरणा स्त्रोत है | निष्क्रिय के भीतर न कोई चेतना होती ना ही कोई अस्तित्व, सिर्फ कथा मात्र ही होता है | हिन्दी में दलित आत्मकथा लेखन की शुरुआत मोहनदास नैमिश् राय की आत्मकथा 'अपने-अपने पिंजरे' से होती है | जिसमें लेखक की मानवीय सरोकारों एवं संवेदनाओं के यथार्थ को अभिव्यक्त करते हैं | दलित आत्मकथा समाज की वास्तविक स्थिति की पहचान करती है | ओमप्रकाश वाल्मीकि की चर्चित आत्मकथा 'जूठन' जिसमें लेखक को रोटी की उतनी समस्या नहीं है जितनी आत्मसम्मान की है | दलितों के लिए वर्ण-संघर्ष ही बुनियादी समस्या है एवं सबसे बड़ा जातीय अपमान | 'दोहरा अभिशाप' में कौसल्या बैसंत्री ने एक तरफ स्त्री होने का तो दूसरी तरफ दलित होने का अभिशाप भोगने वाली स्त्री जीवन की पीड़ा को उजागर करती है | लेखिका ने स्त्री का आर्थिक, दैहिक, वैचारिक एवं मानसिक शोषण, असमानता का भाव और रूढ़ी परम्परा को अपने आत्मकथा में चित्रित की है जिसे पढ़ने के बाद स्त्री के भीतर संघर्ष और साहस जागृत होती है | भारतीय परम्परा के परिप्रेक्ष में पितृसत्तात्मक समाज इस परम्परा को पोषित कर सामान्य स्त्री से लेकर दलित स्त्री को भी शोषण का शिकार बनाती है | इसी परम्परा के कारण स्त्री जीवन अभावपूर्ण, पीड़ाग्रस्त एवं दयनीय बनी रहती है | स्त्री समाज का आधे हिस्से का प्रतिनिधित्व किए बिना समाज का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकती है | प्रत्येक स्त्री को अपने अस्मिता एवं अस्तित्व के

लिए सचेत होने की आवश्यकता है | दलित साहित्य में सबसे समृद्ध लेखन आत्मकथा को ही माना गया है जिसमें दलित लेखक एवं दलित लेखिकाओं ने अपना योगदान दिए हैं | जिसके परिणाम स्वरूप दलितों के मन में सदियों से रची-बसी हीन भावना धीरे-धीरे नष्ट होकर अस्मिता की रक्षा की भावना जागृत होने लगी | दलित लेखिकाएं भी अपनी क्षमता को प्रदर्शित कर चुकी हैं | अपने ऊपर होने वाली दोहरा अन्याय को अपने साहित्यिक लेखन में बेबाकी से प्रस्तुत की है | 'शिकंजे के दर्द' कौसल्या बैसंत्री कहती है, "दरिद्रता और अभाव का जीवन जीते हुए भी दलित स्त्री को अपने पुरुष का प्रभुत्व, सत्ता और शासन को सहन करना पड़ता है | गालियां, अपशब्द, अपमान, उपेक्षा, मारपीट, घर से निकाला जाना आदि अत्याचारों को सहन करना पड़ता है |" जब स्त्री विद्रोह करती है, रूढ़िवादी रीति रिवाज तोड़ने का प्रयास करती है तब वह परिवार और समाज की हिंसा का शिकार बनती है | जब इन आत्मकथाओं को देखते है तो ऐसी समस्या पर दृष्टि जाती है जिसे सोचने मात्र से ही रूह काँप जाती है |

सुमित्रा महरोल की आत्मकथा 'टूटे पंखों से परवाज तक' में लेखिका ने भारतीय समुदाय के इस वर्ग के प्रति अपने संकुचित दृष्टिकोण और पूर्वाग्रह का त्याग कर इस वर्ग के लिए संवेदनशील साकरात्मक और सहयोगी भूमिका निभाई | सुमित्रा जी अपने जीवन की इन त्रासदी को झेली है जिससे बयान करना भी कष्टमयी है बचपन में पोलियो के कारण अपना दोनों पैरों को खो देती है जिसके कारण विकलांगताजन्य पीड़ा को झेली है | लेकिन शिक्षा को अपना हथियार बनायी और अपनी मेहनत लगन और जिजीविषा के बलबूते दिल्ली विश्वविद्यालय मे प्रोफेसर जैसे प्रतिष्ठित पद पर कार्यरत होने में कामयाबी हासिल की | आधुनिक काल में आकर इन दलित लेखिकाओं ने स्वच्छंद रूप से अपनी व्यक्तिगत जीवन से लेकर सामाजिक समस्या तक को दर्शायी है | साहित्य एक सामाजिक संस्था के रूप में कार्य करती है | किसी समाज के उन्नति के साथ उस समाज की भाषा और साहित्य में भी नई-नई प्रवृतियाँ जागृत होती है | आत्मकथा में भी समाजशास्त्रीय दृष्टि निहित होती है |

आत्मकथा लिखना साहसदृढ़ता, ईमानदारी, पारदर्शिता का काम है। दलित साहित्य में आत्मकथाओं का एक विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण स्थान है। इसके साथ ही दलित स्त्री ने भी इस विधा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हिन्दी में आत्मकथा लेखन नया रचना कर्म है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में जब दलित स्त्री की स्थिति पर विचार करते हैं, तो आजादी के इतने वर्षों बाद भी देश में दलित स्त्रियों के लिए ऐसा सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक वातावरण तैयार नहीं हो पाया है।

जिसमें उन्हें पूर्ण रूप से आजादी का एहसास हो सके। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में दलित स्त्री हाशिए पर मौजूद रही हैं, इस व्यवस्था ने उन्हें शिक्षा और सम्पत्ति के अधिकार से वंचित कर दिया गया। वे दलित स्त्री जब अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए बाहर काम करने जाती है, तो वहाँ उसके साथ शारीरिक शोषण का शिकार होती है, न ही उसे परिवार के सदस्य न्याय दिलाते, ना ही यहाँ का सत्ता सामाजिक सरोकार इस तरह से दलित स्त्री का स्थान कांटों से भरा हुआ है। जिससे दलित स्त्री दोहरा, तीहरा शोषण का शिकार होकर अपना जीवन को व्यतीत करने के लिए वेवश है। इस तरह से मानसिक, दैहिक एवं आर्थिक शोषण के खिलाफ कुछ दलित स्त्री लेखिकाओं ने इसके प्रतिकार के लिए हिम्मत जुटा कर अपनी व्यथा को आत्मकथा के रूप में प्रकट किये है। इस तरह से दलित स्त्री की विडम्बना को देखते हुए समाज में शोषण से गुजरने का प्रमुख कारण को ढूँढना मेरे शोध का विषय होगा। दलित स्त्री अपने ही समाज घर-परिवार में घरेलू हिंसा की शिकार होने के लिए बाध्य है। जब भी स्त्री पर शोषण, अत्याचार होते है, तो एक उम्मीद होती है कि प्रशासन व्यवस्था उन्हें न्याय दिला सकती है, क्योंकि प्रशासन व्यवस्था प्रत्येक व्यक्ति की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध होती है, लेकिन प्रायः दलित स्त्री को स्त्री के रूप में न देखकर उसकी जाति को देखा जाता है, कुछ मामले में अगर शिकायत दर्ज भी हो जाती है तो फिर भी सकारात्मक पहल नहीं करते, जिससे दलित पीड़ित स्त्रियां को कभी न्याय नहीं मिलता।

प्रस्तावित विषय पर शोध की आवश्यकता :-

"दलित लेखिकाओं की आत्मकथा का समाज शास्त्रीय अध्ययन" विषय पर शोधकार्य की आवश्यकता इसलिए प्रतीत होती है, क्योंकि दलित स्त्री की पीड़ा पीढ़ी-दर-पीढ़ी से चली आ रही है जो परिवार से शुरू होती तथा समाज, जाति, लिंग के आधार पर होती रहती है। एक दलित स्त्री किन-किन परिस्थितियों से गुजरती है। इन आत्मकथाओं पर शोध कार्य करने से एवं इनके ज्वलन्त प्रश्न को उठाकर दलित स्त्री की वेदना को समझ पाऐंगे, ताकि दलित स्त्री अपने अस्तित्व की पहचान कर पाएँ। ग्रामीण परिवेश में पालन-पोषण होने के कारण मैंने दलित पारिवारिक संबंधों को बहुत नजदीक से देखी हूँ। एक दलित स्त्री को जिन पारिवारिक समस्या, सामाजिक समस्या, आर्थिक समस्या, विवाह संबंधी अवधारणा एवं जातिवादी समस्या से गुजरना पड़ता है। जिस पर शोधकार्य किया जाना उपादेयता रखता है।

दलित आत्मकथा लेखन सम- सामयिक एवं ज्वलंत मूल्यों से अन्वेषित है | खासकर दलित महिला आत्मकथा की संवेदनशीलता अत्यंत ही मार्मिक एवं संवेदना से भरी है | कौसल्या बैसंत्री अपनी आत्मकथा में लिखती है यह मेरे जीवन का एक सम्यक और सर्वांगपूर्ण चित्र है | इसमें पारिवारिक प्रेम विशेष कर बच्चों के लिए माँ के संघर्ष का जो खूबसूरत चित्र है, छोटी-छोटी बातें, छोटे-छोटे सरोकार जिजीविषा के रस से संचित होकर महत्वपूर्ण हो जाते हैं |

लेखिका अपनी गरीबी का जिक्र करते हुए कहती है, "हमारे स्कूल में खाने का प्रोग्राम रहता था तब भी खाना बर्बाद होता था और स्कूल के गेट के बाहर गरीब लोगों की भीड़ पंतलों पर झपट पड़ते थे | स्कूल के खाने में असल में तली जलेबी हमसे खाई नहीं जाती थी क्योंकि हम इस तरह के खाने कभी खाए ही नहीं थे क्योंकि हमारे परिवार की स्थिति ऐसी थी कि कभी भी दूध, घी, मलाई कभी घर आया ही नहीं |"

रजनी तिलक ने अपने आत्मकथा "अपनी जमीं अपना आसमाँ" में भी कहतीलिखती है कि हमारे दलित साहित्य में स्त्रीवादी नजरिए को समझने की बेहद जरूरत है | मैं आज खड़ी हूँ वहाँ से नीचे उतरकर अपने समाज के साथ वापस अपने अनुभवों को साथ करके उनके साथ एकाकार होना चाहती हूँ | आज इस दुनिया में हजारों रज्जो अपनी जमीन ढूंढ रही है, हजारों आसमान में उड़ना चाहती है | ये जमीन ये आसमान हमारा भी है | जीवन में आगे बढ़ने का दम हममे भी है | हम में त्याग है, प्रतिबद्धता है और है जिजीविषा, दुनिया बदलने की |"

इसी तरह दलित लेखिका कावेरी जी अपनी आत्मकथा "टुकड़ा-टुकड़ा जीवन" में लिखती है कि, "पुरुषों की आज्ञा का पालन, उनकी इच्छा और जरूरत के अनुसार नारी का समर्पण ही रहा है | नारी को बचपन से ही ऐसी शिक्षा दी जाती रही है कि पति ही तुम्हारा स्वामी है, वही तुम्हारा सबकुछ है, उसके हाथों ही तुम्हारी मुक्ति है |"

कावेरी जी का जीवन बहुत ही संघर्षशील रहा है | वह कहती है "मैंने जिंदगी में हार मानना नहीं सीखा | संघर्ष तो मेरे जीवन में हमेशा ही रहा जिससे जाहीर होता है कि दलित महिला संघर्षशील होती है | इसी क्रम में दलित नारी की मार्मिक कथा को रेखांकित करते हुए सुशील टाकभौरे जी लिखती है, "मकान किराये पर लेने के लिए जो जाति का अपना महत्व है, जाति के बिना समाज नहीं हो सकता, जाति के बिना इंसान नहीं हो सकता, जाति की जानकारी के बिना सामाजिक व्यवहार नहीं हो सकता |"

इस तरह स्पष्ट है कि दलित लेखिकाओं ने अपने आत्मकथा के माध्यम से जीवनगत संवेदना का सजीव और मार्मिक अंकन पूरी प्रतिवद्धता के साथ किया है | इन आत्मकथाओं में जीवन की वेदना है, विवशता है, करूणक्रंदन है, संघर्ष के प्रति प्रतिबद्धता है और सम-सामयिक मूल्यों पर प्रश्नचिन्ह भी है | ऐसी स्थिति में प्रस्तावित शोध विषय वैज्ञानिक आयामों से सम्प्रित है | अनुसंधान को सहज उद्‌घाटन करता है|

शोध विषय का महत्त्वः-

हिन्दी में दलित आत्मकथा लेखन की शुरूआत मोहन दास नैमिश् राय की आत्मकथा अपने-अपने पिंजरे से हाती है। इसके आगे ओम प्रकाश वाल्मीकि की 'जूठन' आती है | हिन्दी में दलित लेखिकाओं की प्रथम आत्मकथा के रूप में कौसल्या बैसंत्री की आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' माना गया है। जहाँ से दलित लेखिका अपना संघर्ष की व्यथा को प्रस्तुत करती है। कौसल्या बैसंत्री न दलित और स्त्री होने की पीड़ा और वेदना क्या होती है, इसका चित्रण अपनी आत्मकथा में प्रस्तुत की है।

दलित समाज में अशिक्षा, बेरोजगारी, अद्धश्रद्धा, निम्न आर्थिक स्थिति, एवं रीति-रिवाजों के कारण स्त्री का शोषण होता है। ऐसी परिस्थितियों में रहने के लिए मजबूर किये गये दलित जीवन की व्यथा, कथा का दर्द जो दलित समाज की स्त्री भोगती है, वह शिंकजे का दर्द में समाहित है। सुमित्रा महराल की आत्मकथा "टूटे पंखो" से परवाज तक जो वर्ष 2021 में प्रकाशित हुई। यह आत्मकथा एक विकलांग स्त्री की आत्मकथा है, जिसमें लेखिका अपने परिस्थितियों से सामना कर अपने मंजिल को पाने में सफल होती है। एक ऐसी दलित स्त्री जो पोलियों के कारण अपने दोनों पैरों को खो चूकी है, लेकिन शिक्षा को अपने जीवन की शक्ति के रूप में अपनाकर कठिन परिश्रम और जीविविषा से दिल्ली विश्विद्यालय में प्रोफेसर जैसे प्रतिष्ठित पद पर कार्यरत होने में सफल रही। सुमित्रा जी ने अपने आत्मकथा के माध्यम से लिंग व जाति के प्रति पूर्वाग्रह रखने वाले भारतीय समाज के दलित समुदाय में पैदा हुई, लड़की यदि विकलांग भी है, तो उसकी चुनौतियों का अनुमान इस पुस्तक के अध्ययन से ही प्राप्त हो सकती है। आत्मकथा 'अपनी जमीं अपना आसमां में लेखिका रजनी तिलक की बचपन से शादी तक की कथा है, जिसे बाईस उप शीर्षक में लिखा गया है, लेखिका सामाजिक कार्यकर्त्ता रही है, जिससे उनके आत्मकथा में सामाजिक कार्यों का वास्तविक अनुभव झलकता है |

लेखिका रजनी तिलक के संघर्षशील जीवन का दर्शन कराती है | यह आत्मकथा एक सक्रिय सामाजिक और स्त्री कार्यकर्ता की आत्मकथा है | रजनी जी अपने आत्मकथा में अपने भाई को सबसे बड़ा सहयोगी मानी है जो उन्हे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं|

आत्मकथा "टुकड़ा-टुकड़ा जीवन" में लेखिका कावेरी जी अपने बचपन की आत्मघाती दंश की पीड़ा से अपनी स्कूल जीवन की शुरुआत करती है, जहां छुआछूत का दंश बाल मन को क्षुब्ध कर दिया | यहाँ से आत्मकथा की प्रथम टुकड़ा की शुरुआत होती है | जीवन का दूसरा टुकड़ा विवाह के बाद शुरू होता है, जिसमें पारिवारिक संबंध को टूटते देखा है और यहाँ लेखिका परिवार में मानसिक शोषण का भी शिकार हुई है |

लेखिका को ज्ञात हो चुकी है, त्रासदपूर्ण जीवन से मुक्ति पाने का एकमात्र साध्य है :- शिक्षा |

- **पूर्वकृत शोध कार्य :-**

प्रस्तुत शोध विषय "दलित लेखिकाओं की आत्मकथा का समाजशास्त्रीय अध्ययन" मेरे संज्ञानानुसार मौलिक और नवीन दृष्टिकोण का प्रतिवादन करने वाला है | इसीलिए इस विषय पर शोध कार्य करना सर्वथा मौलिक है |

पूर्व में किये गए शोध कार्य :-

1. आत्मकथा की संस्कृति और दलित आत्मकथा लेखन |
2. हिन्दी के दलित लेखकों का आत्मकथा साहित्य |
3. हिन्दी का दलित आत्मकथा साहित्य विशेष संदर्भ (अपने-अपने पिंजरे, जूठन, दोहरा अभिशाप, तिरस्कृत) |
4. हिन्दी में दलित आत्मकथा का उद्भव और विकास |

<u>प्रस्तावित शोध के आधार ग्रंथ :-</u>

1. दोहरा अभिशापः-कौसल्या बैसत्री, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. शिकंज का दर्द :- सुशीला टाकभौर, वाणी प्रकाशन, पटना।
3. टूटे पंखों से परवाज तकः- सुमित्रा महरोल, मरगीनलाइज्ड प्रकाशन ।
4. अपनी जमीं अपना आसमां :- रजनी तिलक, स्वराज प्रकशन, नई दिल्ली।
5. टुकड़ा-टुकड़ा जीवनः- कावेरी, ईशा ज्ञानदीप, प्रकाशन, नई दिल्ली।

शोध की प्रविधि :-

साहित्य के क्षेत्र में किया जाने वाला शोध इस अर्थ में महत्वपूर्ण है, इसमें जिस सभ्यता व संस्कृति का

उल्लेख किया जाता है, जिस वर्ग की छवि हमारे सामने प्रस्तुत की जाती है | वो आज तक अनभिज्ञ है | इसका भी दिग्दर्शन साहित्य के माध्यम से कर सकते है, यह समाज के यथार्थ का अंकन करता है |

प्रस्तावित शोध में विषय हेतु उपर्युक्त और संभावित वृहद स्त्रोतों का गहन अध्ययन शोधार्थी द्वारा परीक्षण, आगमन निगमन, विवेचनात्मक, वर्णात्मक, आलोचनात्मक, समाजशास्त्रीय समीक्षात्मक तथा विवरणात्मक पद्धति का अवलंब किया जाएगा |

शोध परिकल्पना :-

प्रस्तावित शोध विषय "दलित लेखिकाओं की आत्मकथा का समाजशास्त्रीय अध्ययन" के संबंध में मेरी परिकल्पना इन लेखिकाओं के आत्मकथा का गहन अध्ययन किया जाएगा | दलित लेखिकाओं का आत्मकथा वस्तुतः दलित स्त्री की आत्मपीड़ा एवं दलित स्त्री की ऐतिहासिक विवरण का दस्तावेज है | जिसमें सम्पूर्ण दलित स्त्री की घनीभूत पीड़ा अंतर्निहित होती है | धूर्त और समाज के आधार पर बनाए गए नियमों का पालन नारी को करना पड़ता था | इन नियमों को हटाकर या इनके विरुद्ध काम करने पर नारी को कुल कलंकनी मानी जाती थी | ऐसी नारी का दंडित करने का विधान रखा गया | बचपन से ही उसे सहन शीलता और कर्तव्यों की शिक्षा दी जाती थी |

दलित स्त्रियों को सामाजिक धार्मिक, शैक्षणिक और आर्थिक स्थिति को देखते हुए यह समझा जा सकता है, कि दलित नारी सदियों से किस तरह अन्यायपूर्ण कष्टमय जीवन जी रही है, कितने तरह की संताप भोग रही है | ऐसी स्थिति में नियम बनाकर स्त्रियों को सुरक्षा देने के लिए उन नियमों का पालन समाज में होना जरूरी है |

इन दलित लेखिकाओं ने इन्ही मुद्दों को अपने आत्मकथा में उधेड़ी है | समाज की विषमतावादी सामाजिक व आर्थिक स्थिति को बदलकर वे समाज में सही मायने में सबके लिए स्वतंत्रता, समता और भाईचारा लाना

चाहती है | वे शोषण, अत्याचार की परम्परा को तोड़कर दलितों व स्त्रियों को न्याय दिलाने की कोशिश करती है | जो इन आत्मकथाओं द्वारा उठाए जा रहे सवालों के जबाब दिलाने का भी संकल्प है ताकि प्रस्तावित शोध विषय अधिकाधिक विश्वसनीय और सामाजिक हित के लिए उपयोगी बन सके |

<u>प्रस्तुत शोध प्रारूप का अध्यायीकरण :-</u>

प्रस्तावित शोध प्रारूप निम्न अध्यायों में विभाजित होगा :-

भूमिका :-

प्रथम अध्याय :- दलित साहित्य का स्वरूप एवं दलित आत्मकथा की लेखन परम्परा

द्वितीय अध्याय :- समाज शास्त्रीय अवधारणा के निकष पर दलित आत्मकथा

तृतीय अध्याय :- हिन्दी दलित आत्मकथा स्त्री लेखिकाओं का अनुभव, संवेदना, संघर्ष एवं यथार्थ

चतुर्थ अध्याय :- दलित स्त्री आत्मकथाओं में स्त्री अस्मिता की पड़ताल

पंचम अध्याय :- दलित लेखिकाओं के आत्मकथा की समाज शास्त्रीय विश्लेषण

षष्टम अध्याय :- दलित लेखिकाओं के आत्मकथा में विचार धारा का स्वरूप

<u>प्रस्तावित संदर्भ ग्रंथों की सूची :-</u>

1. आत्मकथाकार बच्चनः सं० स्नेहलता शर्मा, आर्या बुक डिपो, नई दिल्ली।
2. दलित साहित्य का समाज शास्त्र-सं० हरिनारायण ठाकुर, प्रकाशक भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।
3. दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्रः ओम प्रकाश बाल्मीकि, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. दलित साहित्य अनुभव, संघर्ष एवं यथार्थः ओम प्रकाश बाल्मीकी,
5. राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली। उत्तर आधुनिकता और कथाकार निराला का स्त्री विमर्शः डॉ० विनोद विश्वकर्मा अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली।
6. दलित नारी :- एक विमर्श:- सं० डॉ० मंजू सुमन संपादनःज्ञानेन्द्र सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. समकालीन भारतीय दलित महिला लेखन आत्मकथा-रजनी तिलक, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. हिन्दी दलित साहित्य का विकाशः डॉ० प्रमोद कोवप्रत वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
9. भारतीय साहित्य में दलित स्त्रीः-सं० रजत रानी "मीनू" मेघा प्रकाशन
10. दलित साहित्य का सामाजिक सांस्कृतिक आधारः डॉ० यशवंत वीरोदय, आशा प्रकाशन।
11. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्रः डॉ० शरण कुमार लिंबाले लोकचेतना प्रकाशन।
12. जाति का विनाशः डॉ० भीमराव अम्बेदकर फारवर्ड प्रेस, दिल्ली।
13. स्त्री-मुक्ति की सामाजिक अनामिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

14. दलित दर्शन की वैचारिकीः बी०आर० विप्लवी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
15. गुलाम गिरीः- ज्योतिबा फुले, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली।
16. दलित वीरांगनाएँ एवं मुक्ति की चाहः बद्रीनारायण, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
17. भीमराव अम्बेदकर एक जीवनीः- क्रिस्तोफ जाफलो, अनुवादः योगेन्द्र दत्त, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
18. दलित विमर्श की भूमिका – कँवल भारती – के0 के0 प्रकाशन नई दिल्ली।
19. जाति : एक विमर्श – जय प्रकाश कर्दम – सम्यक प्रकशन नई दिल्ली
20. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ0 बच्चन सिंह, राधा कृष्ण प्रकाशन

शोध निर्देशिका :

विनीता कुमारी
15-04-2024

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
एल०के०वी०डी० कॉलेज
ताजपुर (समस्तीपुर)

डॉ0 विनीता कुमारी
एसोसिएट प्रोफेसर
डॉ0 एल0 के0 वी0 डी0 कॉलेज ताजपुर, समस्तीपुर

शोधार्थी

अंशु कुमारी
एम0 ए0 हिन्दी
ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वर नगर, दरभंगा
नेट, जे0 आर0 एफ0
पैट क्रमांक – E2209044

शोध सारांश

दलित आत्मकथाएं हिन्दी आत्मकथा के क्षेत्र की नवीन सृष्टि है | वस्तुतः दलित जीवन जीने वालों की कथा व्यथा है | दलित लेखिकाओं ने पूरी दृढ़ता के साथ अपने जीवन की घटित घटनाओं का अंकन किया है | चाहे वह कौसल्या बैसंत्री, सुशील टाकभौरे, सुमित्रा महरोल, रजनी तिलक एवं कावेरी हो, इन्होंने अपने जीवनानुभव एवं हाशिए पर जीवन जी रहे मानव की समस्याओं को समाज के सामने रखकर प्रश्न चि लगाती है ऐसी स्थिति में प्रस्तावित शोध विषय सम-सामयिक मूल्यों से अन्वेषित है |

शोध निर्देशिका :

विनीता कुमारी
15-04-2024

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
एल०के०वी०डी० कॉलेज
ताजपुर (समस्तीपुर)

डॉ0 विनीता कुमारी
एसोसिएट प्रोफेसर
डॉ0 एल0 के0 वी0 डी0 कॉलेज ताजपुर, समस्तीपुर

शोधार्थी

अंशु कुमारी
एम0 ए0 हिन्दी
ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वर नगर, दरभंगा
नेट, जे0 आर0 एफ0
पैट क्रमांक – E2209044